

NCERT SOLUTIONS

CLASS - 12th



aglasem.com

Class : 12th

Subject : Political science

Chapter : 4

Chapter Name : भारत के विदेश संबंध

Q1 इनमें से प्रत्येक कथन के विरुद्ध सही या गलत लिखें-

(अ) गुटनिरपेक्षता ने भारत को यूएसए और सोवियत संघ दोनों से सहायता प्राप्त करने की अनुमति दी।

(ब) भारत का उसके पड़ोसियों के साथ संबंध शुरू से ही तनावपूर्ण रहा है।

(स) शीत युद्ध ने भारत और पाकिस्तान के बीच संबंधों को प्रभावित किया है।

(द) 1971 में शांति और मित्रता की संधि संयुक्त राज्य अमेरिका से भारत की निकटता का परिणाम थी।

Answer.

(अ) असत्य

(ब) सत्य

(स) असत्य

(द) असत्य

Page : 80 , Block Name : प्रश्नावली

Q2 नेहरू ने स्वतंत्रता के अनिवार्य संकेतक के रूप में विदेशी नीति के संचालन को क्यों माना? अपने उत्तर में उदाहरणों के साथ किन्हीं दो कारणों को बताएं।

Answer. विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि में पैदा हुए एक राष्ट्र के रूप में, भारत ने अन्य विदेशी देशों की संप्रभुता का सम्मान करने और शांति के रखरखाव के माध्यम से सुरक्षा हासिल करने के उद्देश्य से अपने विदेशी संबंधों का संचालन करने का निर्णय लिया। इस लक्ष्य की प्रतिध्वनि सविधान के नीति निर्देशक सिद्धांतों में सुनाई देती है। नेहरू एक पीएम और विदेश मंत्री के रूप में, उन्होंने '1946' से '1964' तक भारत की विदेश नीति के निर्माण और कार्यान्वयन में गहन प्रभाव डाला। नेहरू की नीति के तीन प्रमुख उद्देश्य कठिन अर्जित संप्रभुता को संरक्षित

करना, क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करना और तेजी से आर्थिक विकास को बढ़ावा देना थे। नेहरू गुटनिरपेक्षता की रणनीति के माध्यम से इन उद्देश्यों को प्राप्त करना चाहते थे।

Page : 80 , Block Name : प्रश्नावली

Q3 "विदेशी मामलों का संचालन घरेलू मजबूरियों और प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के दोहरे दबाव का एक परिणाम है"। 1960 के दशक में भारत की विदेश नीति से एक उदाहरण लेकर उत्तर दें।

Answer. किसी राष्ट्र की विदेश नीति घरेलू और बाहरी कारकों के परस्पर संबंध को दर्शाती है। इसलिए, स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने को प्रेरित करने वाले महान आदर्शों ने भारत को अपनी विदेश नीति बनाने को प्रभावित किया। लेकिन भारत को स्वतंत्रता की प्राप्ति शीत युद्ध के युग की शुरुआत के साथ हुई। इस अवधि को वैश्विक स्तर पर यूएस और यूएसएसआर के नेतृत्व में दो ब्लॉकों के बीच राजनैतिक, आर्थिक और सैन्य टकराव द्वारा चिह्नित किया गया था। इसी अवधि में संयुक्त राष्ट्र की स्थापना, परमाणु हथियारों के निर्माण, चीन में कम्युनिस्ट शासन, और अनोपनिवेशीकरण की शुरुआत जैसे घटनाक्रम भी देखे गए। इसलिए, भारत के नेतृत्व को प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में अपने राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाना था।

Page : 80 , Block Name : प्रश्नावली

Q4 यदि आपको निर्णय लेना हो तो भारत की विदेश नीति के किन्हीं दो पहलुओं को पहचानें जिन्हें आप बनाए रखना चाहते हैं और दो जिन्हें आप बदलना चाहते हैं। अपनी उत्तर के समर्थन में कारण दें।

Answer. भारत की नीति में अन्य राष्ट्रों के हस्तक्षेप ना करने की नीति सबसे अच्छी है क्योंकि उस तरह से भारत किसी अन्य राष्ट्र पर निर्भर नहीं है और यह अपने आप निर्णय ले सकता है। भारत की सत्ता की राजनीति में भागीदारी से बचने और किसी समूह में शामिल न होने की नीति भी एक और महान नीति है क्योंकि इस तरह भारत दोनों राष्ट्रों के साथ समझौते और मित्रता संधि में शामिल हो सकता है। किसी अन्य राष्ट्र के साथ पहले युद्ध न करने की भारत की नीति को मैं बदलना चाहता हूं क्योंकि चीन और पाकिस्तान जैसे अन्य देशों ने भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया जिसके कारण दोनों पक्षों को भारी विनाश हुआ लेकिन भारत को इनकी वजह से बहुत नुकसान उठाना पड़ा।

Page : 80 , Block Name : प्रश्नावली

Q5 निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

(अ) भारत की परमाणु नीति

(ब) विदेश नीति के मामलों में सर्व-सहमति

Answer.

(अ) भारत के लिए महत्वपूर्ण कदम, 1974 में किया गया पहला परमाणु विस्फोट था। नेहरू ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से एक आधुनिक भारत बनाने के लिए हमेशा अपना विश्वास रखा। भारत शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु ऊर्जा उत्पन्न करना चाहता था। नेहरू परमाणु हथियारों के खिलाफ थे।

(ब) विदेशी संबंधों का संचालन कैसे किया जाता है, इस बारे में राजनीतिक दलों के बीच मामूली मतभेद होते हैं। भारतीय राजनीति आमतौर पर राष्ट्रीय हस्तक्षेप, अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के संरक्षण और राष्ट्रीय हित के सवालों पर पार्टियों के बीच एक व्यापक समझौते द्वारा चिह्नित होती है।

Page : 80 , Block Name : प्रश्नावली

Q6 भारत की विदेश नीति शांति और सहयोग के सिद्धांतों के आधार पर बनाई गई थी। लेकिन भारत ने 1962-1971 के बीच दस वर्षों के अंतराल में तीन युद्ध लड़े। क्या आप कहेंगे कि यह विदेश नीति की विफलता थी? या आप कहेंगे कि यह अंतरराष्ट्रीय स्थिति का परिणाम था? अपने जवाब का समर्थन करने के लिए कारण दीजिए।

Answer. भारत के तीन युद्ध विदेश नीति की विफलता नहीं थी क्योंकि भारतीय विदेश नीति पहले, दूसरे राष्ट्र पर युद्ध न छेड़ने की बात करती है लेकिन यह बात करती है कि यदि कोई भी देश भारत के खिलाफ युद्ध छेड़ता है तो भारत विदेशी शासन की रक्षा करने की कोशिश नहीं करेगा। भारत ने जो तीन युद्ध लड़े थे वे संकट की स्थिति के कारण थे जो भारत की आजादी के बाद से थी। भारत का विदेशी शासन शांति और सहयोग का था, इसीलिए भारत ने कभी भी किसी अन्य राष्ट्र के खिलाफ युद्ध की पहल नहीं की। भारत ने हमेशा आर्थिक और राजनीतिक रूप से पड़ोसी देशों की मदद करके शांति और सहयोग की अपनी नीति का पालन किया।

Page : 80 , Block Name : प्रश्नावली

Q7 क्या भारत की विदेश नीति एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय स्तर की महाशक्ति बनने की उसकी इच्छा को दर्शाती है? एक उदाहरण के रूप में 1971 के बांग्लादेश युद्ध के सन्दर्भ में अपने उत्तर पर विचार करें।

Answer. भारत दुनिया की एक विकासशील अर्थव्यवस्था है, जिसकी आज की दुनिया में एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय शक्ति होने की इच्छा है। विश्व राजनीति में एक मजबूत आधार होना बहुत जरूरी है। जिन छोटे राष्ट्रों के पास कोई आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण नहीं है, वे वास्तव में विश्व शक्तियों की छाया से बाहर नहीं आ सकते हैं। वे इन महाशक्तियों के लिए एक उपनिवेश की तरह थे। भारत की राजनीतिक और आर्थिक शक्ति दर्शाती है कि भारत

एक अग्रणी शक्ति है। 1971 के बांग्लादेश युद्ध में भारत की भूमिका महत्वपूर्ण थी क्योंकि पाकिस्तान का टूटना भारत की मजबूत राजनीतिक शक्ति के लिए महत्वपूर्ण है।

Page : 81 , Block Name : प्रश्नावली

Q8 किसी राष्ट्र का राजनीतिक नेतृत्व उसकी विदेश नीति को कैसे प्रभावित करता है? भारत की विदेश नीति के उदाहरणों की सहायता से इसे स्पष्ट कीजिए।

Answer. एक राष्ट्र का मजबूत राजनीतिक नेतृत्व उसकी विदेश नीति को बहुत बड़े स्तर पर प्रभावित करता है, एक मजबूत नेतृत्व के बिना न तो कोई मार्गदर्शन होगा, न भविष्य के लक्ष्य, बेहतर देश के लिए कोई आकांक्षी। नेहरू जैसा मजबूत नेतृत्व भारत को दिखाता है कि नेहरू के नेतृत्व में भारत कैसे विकसित हुआ और भारत का विदेशी प्रभुत्व स्थापित हुआ। इंदिरा गांधी के मजबूत नेतृत्व ने हमेशा पाकिस्तान को दो हिस्सों में बाँटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो भारत के लिए एक बड़ी उपलब्धि थी। पाकिस्तान जिसने हमेशा आतंकवाद और युद्ध पर ध्यान केंद्रित किया, वह कभी भी भारत और अमेरिका जैसे अन्य देशों के लिए शांति और सहयोग वाला देश नहीं था।

Page : 81 , Block Name : प्रश्नावली